International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 30-09-2021, Accepted: 15-10-2021, Published: 01-11-2021
Volume 7, Issue 6, 2021, Page No. 6-8

मैथलीशरण गुप्त के काव्य में नारी विषयक चिन्तन

रवीन्द्र कुमार
सहायक प्राध्यापक हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय भतरौंजखान, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश
हिन्दी साहित्य में नारी विषयक समस्याओं का चित्रण अनेक कवियों ने किया है । कुछ कवियों ने नारी पात्रों के माध्यम से अपनी लेखनी द्वारा सामाजिक समस्याओं को उठाने का काम किया है । उन कवियों में एक नाम मैथलीशरण गुप्त का भी लिया जाता है । उनके सम्पूर्ण काव्य में नारी विषयक चिन्तन अपने चरम पर पहुंचा । भारतीय संस्कृति में नारी का महत्वपूर्ण स्थान है । उसके बिना कोई भी कार्य पूर्ण नहीं हो सकता है । गुप्त जी का विचार है कि नारी ही किसी परिवार और समाज की दशा सुधार सकती है । समाज में देखने को भी मिलता है कि जिस समाज में नारियों का शिक्षा का स्तर अच्छा होता है । वो समाज तरक्की के मार्ग पर चल पड़ता है । गुप्त जी ने अपने काव्य के माध्यम से नारी के प्रति श्रृद्धा भाव व सम्मान रखते हुए उनके हृदय से यहीं भाव उजागर हाते है :–
"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता"
आधुनिक समाज में "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता "सिर्फ सूक्ति बनकर रह गई है । इस सूक्ति को सार्थक करने के लिए समाज में नारी को श्रद्धा भाव से सम्मान देना होगा ,नारी चेतना को जागृत करना होगा ।

मूलशब्द: समाज में नारी के प्रति चेतना, श्रद्धा भाव, भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान, ,नर एवं नारी एक–दूसरे के पूरक, कैकयी, सीता, उर्मिला, माण्डवी , राधा ,कुन्ती, द्रोपदी, उत्तरा, यशोधरा आदि नारी पात्र

प्रस्तावना

मैथलीशरण गुप्त जी की गणना द्विवेदी युग के श्रेष्ठ व प्रतिनिधि कवि के रूप में की जाती है । महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से इन्होंने खड़ी बोली में महाकाव्य, खण्डकाव्य ,कविता और कई अन्य प्रकार के लेख लिखे । मैथलीशरण गुप्त ने हिन्दी साहित्य को अपनी विलक्षण प्रतिभा से प्रभावित किया । गुप्त जी ने अपने काव्य में नारी विषयक जो प्रतिरूप दिया है, उससे हिन्दी सहित्य जगत में एक नये मार्ग की खोज शुरू हुई । उनकी रचनाओं में नारी विषयक चिन्तन , मनोदशाओं का विषद और मार्मिक चित्रण प्रस्तुत हुआ है । गुप्त जी ने अनुसार भारतीय संस्कृति में नारी का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। स्त्री और पुरुष ईश्वर की दो समान कृतियाँ है। दोनों एक दूसरे के पूरक है। स्त्री–पुरुष मिलकर जीवन की एक महत्वपूर्ण इकाई का निर्माण करते है। 'दाम्पत्य' शब्द इसी स्थिति को प्रकट करता है। हमारी संस्कृति में स्त्री की शक्ति की महत्ता इसी बात से प्रकट होती है कि वह न पुरुष की अनुगामनी है, अपितु वह पूरक है, उसकी जीवन साथी है, सहधर्मिणी है। इन सब के बावजूद वह पुरुष की जन्मदात्री और उत्पन्ना होने से उसका स्थान पुरुष से श्रेष्ठ है। डॉ0 अर्चना शेखावत ने भी भारतीय संस्कृति में नारी के अतीतकालीन स्थान के उत्कर्ष के भव्यचित्र को अंकित करते हुए माना है कि "भारतीय संस्कृति में नारी अर्द्धागिनी है, और पुरुष अर्द्धनारीश्वर युगल सामंजस्यकी विलक्षण कल्पना है। "[1]
कविवर गुप्त ने भी अपनी लेखनी से आर्य–स्त्रियों के स्थान को पुरुष–समाज में निर्धारित करते हुए माना है कि वे सद्गृहस्थी की वाहक दैवीय शक्ति के समान थी। उन्ही के शब्दों में –

"केवल पुरुष ही थे न वे जिनका जगत को गर्व था,
गृह–देवियाँ भी थीं हमारी देवियाँ ही सर्वथा।" [2]

आज नारी को सृष्टि की सर्वोत्तम रचना माना गया है। कवि जयशंकर प्रसाद ने नारी के प्रति अपना आदर श्रद्धा भाव को इस प्रकार व्यक्त किया है–

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत–नग–पग तल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में ।"[3]

आज नारी चेतना हमारे समय की जीवंत वास्तविकता है। आज की नारी अपने वजूद को महसूस करती है। एक सजग इकाई के रूप में वह तमाम यथार्थ स्थितियों से प्रतिकूल होती है। वर्तमान सामाजिक परिवेश के अन्तर्विरोधों व असंगतियों को वह आज के परिप्रेक्ष्य में जानना चाहती है।
उनका विलक्षण विवेचन अपनी चेतना के आधार पर करना चाहती है। डॉ0 रमेश कुमार त्रिपाठी ने माना है कि " नर एवं नारी एक–दूसरे के पूरक है लेकिन दोनों में से जब भी किसी ने अपनी मर्यादा तोड़ने का निरर्थक प्रयास किया है, तब उसे असफलता ही हाथ लगी है।" विधाता ने नर–नारी दोनों को महत्वपूर्ण बनाया हैं। वे एक दूसरे के पूरक है और इसी में जीवन की सार्थकता है। "[4]
रामायण और 'महाभारत' संस्कृत साहित्य की आदिम, प्रमुख, एवं महत्वपूर्ण रचना है। इन रचनाओं के आधार पर ही मनीषियों द्वारा तात्कालिक समय का नामकरण रामायण काल और महाभारत काल किया गया है। आदिकवि 'वाल्मीकि' ने अपने काव्य ग्रंथ 'रामायण' में यथार्थता, एवं सहजता के साथ रामकथा वर्णित की है। रामकथा में माता सीता में शील एवं सतीत्व की परिसीमा है। महर्षि 'वाल्मीकि' की दृष्टि अत्यन्त उदात्त एवं विस्तृत थी।
रामायण काल में नारी का स्थान अत्यन्त गौरवपूर्ण था। इस काल में नारी देवी के रूप में अंकित थी। पार्वती, सती, गंगा, लक्ष्मी, सीता आदि ऐसी ही अलौकिक ,वं चरित्रवान नारीया सृष्टि सृजन देखने को मिलता है। सीता भगवान श्रीराम की पत्नी के रूप में वर्णित है जिन पर सम्पूर्ण रामकथा आश्रित है। सीता का विवाह स्वयंवर प्रथा से हुआ जो नारी के पति चुनने के अधिकार का प्रत्यक्ष उदाहरण रामायण काल में देखने को मिलता है। साहित्य

में रामायण काल वह काल था जिसमें पुरुषों के साथ उनकी पत्नियों का भी चित्रण किया जाता था। राजा दशरथ के चार पुत्रों के साथ मूर्तिमयी उनकी चारो पत्नियों का वर्णन कवि गुप्त ने आधुनिक महाकाव्य 'साकेत' में इस प्रकार चित्रित किया है।

"राम–सीता, धन्य धीराम्बर–इला,
'शौर्य्य–सह सम्पति, लक्ष्मण–उर्मिला।
भरत–कर्त्ता माण्डवी उनकी क्रिया,
कीर्ति–सी श्रुतिकीर्ति शत्रुध्नप्रिया।
ब्रह्मा की है चार जैसी पूर्तियाँ,
ठीक वेसी चार माया–मूर्तियाँ।"[5]

हिन्दी साहित्य के द्विवेदी युग में नारी को उसके अतीत गौरव का स्मरण दिलाने तथा समाज में उसकी महत्ता प्रतिपादित करने में कविवर गुप्त का योगदान भी अविस्मरणीय है। उनका नारी संबंधी दृष्टिकोण यह है कि उन्होंने भारतीय नारी की दशा का चिंतन वर्णन पश्चिमी चिंतन के बजाय भारतीय चिंतन की पृष्ठभूमि में किया है। भारतीय संस्कृति के 'वैतालिक' गुप्त ने नारी के अबला रूप को इस प्रकार गौरवान्वित किया है कि उनकी नारी का रूप मानव के लिए मानवीय तथा दानव के लिए दानवी के समान है–

मैं अबला हूँ किन्तु न अत्याचार सहूँगी।
तुम दानव के लि, चण्डिका बनी रहूँगी। "[6]

आज नारी पुरुष के साथ हर कार्य में कंधें से कंधा मिलाकर कार्य कर रही है। उनकी नारी पुरुष से सहयोग की अपेक्षा करती हुई कहती है कि मेरे सहयोग में ही एक–दूसरे का भला है क्योंकि एक नारी का अहित कर आज तक कुछ भी हासिल नहीं हो सका। उनका मानना है कि –

"वाम होकर हर सकेगा सुख न मेरा दैव! तू,
हो भले ही विश्व में बॉधक विशेष सदैव तू।
भूमि–सुख न सही, मिलेगा स्वर्ग–सुख मुझको अभी,
आर्य–कन्या का अहित कोई न कर सकता कभी। "[7]

भारतीय समाज में नारी से पृथक होकर किसी भी समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है। नारी, व्यक्ति एवं समाज के बीच की एक मर्यादित इकाई है। कवि गुप्त की नारी परिवार की संरचना में विश्वास कर, इस इकाई को मजबूती प्रदान करती है। उनकी नारी ,कल परिवार की नहीं, संयुक्त परिवार की अधिष्ठात्री है । 'पंचवटी' खण्डकाव्य में सीता लक्ष्मण के वन में साथ चलने पर कहती है कि परिवार का संचालन तपस्वी बनने से बढ़कर है । स्वयं सीता के शब्दों में कवि ने परिवार की श्रेष्ठता इस प्रकार वर्णित है –

"सीता बोलीं कि ये पिता की, आज्ञा से सब छोड़ चले,
पर देवर, तुम त्यागी बनकर, क्यों घर से मुँह मोड़ चले ? "[8]

आज देश की राजनीति में नेताओं की भरमार हो गई है। लेकिन योग्य एवं दक्ष शासक का आज भी अभाव है। देश में महिलाओं व गरीबों पर अत्याचार हो रहे है और शासक वर्ग मौन है। नेता लोग शासन की आड़ में अत्याचार कर रहे है। कवि गुप्त ने अपने 'सैरेन्ध्री' खण्डकाव्य में सैरेन्ध्री के माध्यम से वर्णित किया है कि यदि शासक अपने राज्य में महिलाओं की रक्षा नहीं कर सकता तो उसे सत्ता में रहने का कोई अधिकार नहीं है। वे 'सैरेन्ध्री' खण्डकाव्य में शासक वर्ग को चेतावनी देते हुए लिखते है–

"तुममें यदि सामर्थ्य नही ं है अब शासन का,
तो क्यों करते नहीं त्याग तुम राजासन का ?
करने में यदि दमन दुर्जनों का डरते हो,
तो छूकर क्यों राज–दण्ड़ दूषित करते हो ! "[9]

हमारी संस्कृति में 'वसुधैव कटुम्बकम' का भाव प्राचीनकाल से ही चला आ रहा है। पाश्चात्य प्रभाव के कारण भारत के पड़ौसी देशों ने इस भाव को खण्डित करने का प्रयास किया। लेकिन भारतीयों ने सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार माना है और अपने हृदय की विशालता का परिचय दिया है। इस विषय में कवि गुप्त की नारी 'यशोधरा' अपने पुत्र राहुल को समझाती है कि तुम्हारे पिता ने सृष्टि से नाता जोड़कर सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार मान लिया। कवि गुप्त 'यशोधरा' चम्पूकाव्य में लिखते है कि –

"बेटा घर छोड़ वे गये है ं अन्य दृष्टि से,
जोड़ लिया नाता है उन्होनें सब सृष्टि से।
हृदय विशाल और उनका उदार है,
विश्व को बनाना चाहता जो परिवार है।"[10]

भारतीय संस्कृति में नारी की आजादी एक मर्यादा की सीमा तक ही निर्धारित है। पाश्चात्य संस्कृति के समान आजादी नारी को गर्त में ले जाने वाली है। कवि गुप्त अपने 'शकुन्तला' अनुदित काव्य में मुनि 'कण्व' के 'शकुन्तला' को विदा करते समय जो उपदेश देते है वे भारतीय नारी के वैवाहिक जीवन के आधार स्तम्भ है। वे कहते है–

"परिजनों को अनुकूल आचरण से सुख दीजो,
कभी भूलकर बड़े भाग्य पर गर्व न कीजो ।"
इसी चाल से स्त्रियाँ सुगृहिणी–पद पाती है।
उलटी चलकर वंश–व्याधियाँ कहलाती है ं। "[11]

निष्कर्ष

प्राचीन काल से ही संवेदना के स्तर पर नारी अपमानित , शोषित और तिरष्कृत होती रही है। गुप्त जी ने इस मिथक का तोड़ा है गुप्त जी ने अपनी रचनाओं में नारी पात्रों के माध्यम से उनके चरित्र की विशेषताओं पर प्रकाश डाला है ,उनकी रचनाओं की नारी पात्र सजग, सशक्त, उच्च आदर्श रूप प्रस्तुत करने वाले है। वह समाज में व्याप्त बुराई से लडने की क्षमता रखती है, जो कि समाज में व्याप्त अंधविश्वासों और कुरीतियों का शिकार नही होती अपितु समाज को अपनी सेवा देकर समाज को नई दशा और दिशा प्रदान करने में पूणयतः सफल रही है । आज के समाज में प्राचीन और मध्यकालीन समाज से भी ज्यादा नारी का सम्मान है। कुछ घटनायें जो समाज का पूरी तरह प्रभावित करने का काम करती है जो आज के समाचार– पत्रों व न्यूज चैनलों में नजर आने लगती है ।

गुप्त जी ने अपने काव्य के माध्यम से नारी के प्रति श्रृद्धा भाव व सम्मान रखत हुए उनके हृदय से यहीं भाव उजागर हाते है :–

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता"

गुप्त जी का विचार है कि नारी ही किसी परिवार और समाज की दशा सुधार सकती है । समाज में देखने को भी मिलता है कि जिस समाज में नारियों का शिक्षा का स्तर अच्छा होता है । वो समाज तरक्की के मार्ग पर चल पड़ता है । समाज में रहने वाले परिवारों में नारियों को उच्च श्रेणी का दर्जा प्राप्त रहता है । समाज में नारियों अनेक समस्यायें है, उन समस्याओं को उजागर करने का काम साहित्यकारों का होता है , कई महिला

साहित्यकारों ने भी बिना किसी डरे समाज में नारी के प्रति हो रहे अत्याचारों को उजागर करने का कार्य किया है । राष्ट्रकवि गुप्त जी ने महिलाओं की समस्याओं को समझा और उसे राष्ट्रीय स्तर पर उठाने का कार्य किया ।

गुप्त जी की रचनाओं में नारी के जो रूप हैं चाहे वो पत्नी रूप हो या मां के आर्दश रूप में चित्रित है । प्राचीन नारी चरित्रों को नए परिवेश और नवीन ढ़ग से प्रस्तुत करने में कवि ने सफलता पाई है । साकेत, यशोधरा, द्वापर, जयद्रथ वध सभी रचनाओं के पात्र प्राचीन होकर भी नवीन है । यही कारण है कि कैकयी, सीता, उर्मिला, माण्डवी , राधा ,कुन्ती, द्रोपदी, उत्तरा, यशोधरा आदि नारी पात्र अविस्मरणीय बन गये है ।

संदर्भ सूची

1. डॉ0 अर्चना शेखावत : समकालीन हिन्दी महिला कहानीकारों की कहानियों में नारी चेतना पृ0स0 56
2. मैथिलीशरण गुप्तः भारत भारती पृ0सं0 17
3. जयशंकर प्रसादः कामायनी पृ0सं0 38
4. डॉ0रमेश चंद्र त्रिपाठीः समकालीन हिन्दी पत्रकारिता में नारी संदर्भ पृ0स0 113
5. मैथिलीशरण गुप्तः साकेत पृ0सं0 02
6. मैथिलीशरण गुप्तः सैरेन्ध्री पृ0सं0 20
7. मैथिलीशरण गुप्तः रंग में भंग पृ0सं0 13
8. मैथिलीशरण गुप्तः पंचवटी पृ0सं0 02
9. मैथिलीशरण गुप्तः सैरेन्ध्री पृ0सं0 22
10. मैथिलीशरण गुप्तः यशोधरा पृ0सं0 79
11. मैथिलीशरण गुप्तः शकुन्तला पृ0सं0 26